SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्रेमचंद का हिन्दी साहित्य में योगदान

डॉली पांडेय, (Ph.D.)
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
डॉली पांडेय, (Ph.D.)
अग्रसेन महाविद्यालय, पुरानी बस्ती,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/03/2022
Revised on : -----
Accepted on : 02/04/2022
Plagiarism : 04% on 26/03/2022

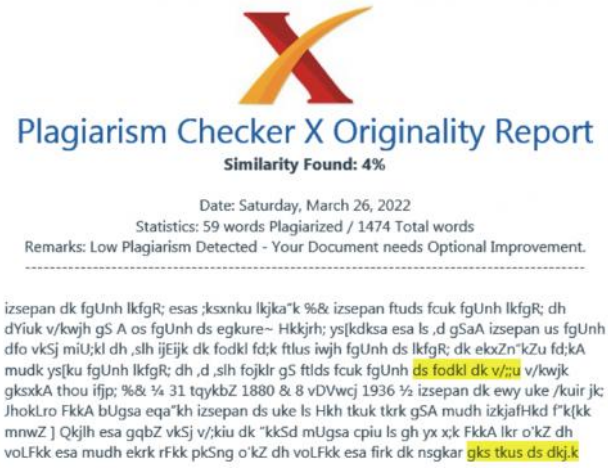
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Saturday, March 26, 2022
Statistics: 59 words Plagiarized / 1474 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

izsepan dk fgUnh lkfgR; esas ;ksxnku lkjka"k %& izsepan ftuds fcuk fgUnh lkfgR; dh dYiuk v/kwjh gS A os fgUnh ds egkure~ Hkkjrh; ys[kdksa esa ls ,d gSaA izsepan us fgUnh dfo vkSj miU;kl dh ,slh ijEijk dk fodkl fd;k ftlus iwjh fgUnh ds lkfgR; dk ekxZn"kZu fd;kA mudk ys[ku fgUnh lkfgR; dh ,d ,slh fojklr gS ftlds fcuk fgUnh ds fodkl dk v/;;u v/kwjk gksxkA thou ifjp; %& ¼ 31 tqykbZ 1880 & 8 vDVwcj 1936 ½ izsepan dk ewy uke /kuir jk; JhokLro FkkA bUgsa eqa"kh izsepan ds uke ls Hkh tkuk tkrk gSA mudh izkjafHkd f"k{kk mnwZ] Qkjlh esa gqbZ vkSj v/;kiu dk "kkSd mUgsa cpiu ls gh yx x;k FkkA lkr o'kZ dh voLFkk esa mudh ekrk rFkk pkSng o'kZ dh voLFkk esa firk dk nsgkar gks tkus ds dkj.k

शोध सार

प्रेमचंद जिनके बिना हिन्दी साहित्य की कल्पना अधूरी है । वे हिन्दी के महानतम् भारतीय लेखकों में से एक हैं। प्रेमचंद ने हिन्दी कवि और उपन्यास की ऐसी परम्परा का विकास किया जिसने पूरी हिन्दी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। उनका लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा।

मुख्य शब्द

रचनात्मक, विरासत, पराधिनता, दृष्टिकोण, यथार्थवाद.

जीवन परिचय

(31 जुलाई 1880 – 8 अक्टूबर 1936)

प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्हें मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू, फारसी में हुई और अध्यापन का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया था। सात वर्ष की अवस्था में उनकी माता तथा चौदह वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्षमय रहा।

साहित्यिक जीवन

1901 से उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ हुआ। उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका और अंतिम कहानी कफन नाम से प्रकाशित हुई। प्रेमचंद के साहित्य में दलित साहित्य नारी साहित्य की जड़ें दिखाई देती है। उन्होंने मूलरूप से हिन्दी में 1915 से कहानियाँ लिखना और 1918 से उपन्यास लिखना शुरू किया। प्रेमचंद ने कुल तीन सौ कहानियाँ, लगभग एक दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे। उन्होंने कुछ नाटक भी लिखे और कुछ अनुवाद कार्य किया। आपकी कई साहित्यिक कृतियों

का अंग्रेजी, जर्मन अनेक भाषा में अनुवाद हुआ। गोदान उनकी काल रचना है। उन्होंने हिन्दी और उर्दू में पूरे अधिकार से लिखा। उनकी अधिकांश रचनाएँ मूलरूप से उर्दू में लिखी गई हैं, लेकिन उनका प्रकाशन हिन्दी में पहले हुआ। तैंतीस वर्षों के रचनात्मक जीवन में वे साहित्य की विरासत सौंप गए जो गुणों की दृष्टि से अमूल्य और आकार की दृष्टि से असीमित हैं।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यासः गोदान, गबन, सेवा सदन, प्रतिमा प्रेमाशय, निर्मला, प्रेमा, कायाकल्प, रंगभूमि, कर्मभूमि, मनोरमा, वरदान, मंगलसूत्र।

कहानीः सोजेवतन, मानसरोवर (आठ खंड), सप्तसरोज, पंचपरमेश्वर, नवनिधि, प्रेमपूर्णिमा, समरयात्रा, ईदगाह, पूस की रात, कफन, बूढ़ी काकी आदि।

नाटकः कर्बला, वरदान।

बालसाहित्यः रामकथा, कुत्ते की कहानी, संपादन, मर्यादा, माधुरी हंस, जागरण।

प्रेमचंद की अधिकतर कहानियों में निम्न एवं मध्यम वर्ग का चित्रण है। प्रेमचंद ने कुल 301 कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों में विषय और शिल्प की विविधता है। मनुष्य के सभी वर्गो से लेकर पशु–पक्षियों को अपनी कहानियों में मुख्य पात्र बनाया है। प्रेमचंद की कहानियों में किसानो, मजदूरों, स्त्रियों, दलितों आदि की समस्याएं गंभीरता से चित्रित हुई हैं। उन्होंने समाज सुधार, देशप्रेम, स्वाधीनता संगम आदि से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ऐतिहासिक तथा प्रेम संबंधी कहानियाँ भी काफी लोकप्रिय हैं।

उपन्यास

प्रेमचंद के उपन्यास सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में मील के पत्थर हैं। इन्होने सेवासदन (1918) उपन्यास से हिंदी उपन्यास की दुनिया में प्रवेश किया। सेवासदन में उन्होने ''भारतीय नारी की पराधीनता'' को व्यक्त किया है। प्रेमाश्रम किसान जीवन पर लिखा। हिंदी का संभवतः पहला उपन्यास है। गोदान का हिंदी साहित्य के साथ विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण रचना है। एक सामान्य किसान को नायक बनाना, भारतीय उपन्यास परंपरा की दिशा बदल देने जैसा था। कथानायक होरी की मृत्यु सामंतवाद और पूंजीवाद के चक्र में फँसकर हो जाती है। गोदान का कारूणिक अंत इस बात का गवाह है कि प्रेमचंद का आदर्शवाद से मोहभंग हो चुका था। निर्मला उपन्यास का प्रकाशन सन् 1927 में हुआ था। सन् 1926 में दहेजप्रथा और अनमेल विवाह को आधार बनाकर इस उपन्यास का लेखन प्रारंभ हुआ।

रंगभूमि उपन्यास ऐसी कृति है जो नौकरशाही तथा पूंजीवाद के साथ जनसंघर्ष का ताण्डव, सत्य, निष्ठा, अहिंसा के प्रति आग्रह, स्त्री दुर्दशा का भयावह चित्रांकन है। परतंत्र भारत की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक समस्याओं के बीच राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण यह उपन्यास लेखक के राष्ट्रीय दृष्टिकोण को बहुत ऊँचा उठाता है।

कर्मभूमि 1932 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में विभिन्न राजनीतिक समस्याओं को कुछ परिवारों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। आदर्शोन्मुख, यथार्थवाद से ओतप्रोत कर्मभूमि उपन्यास प्रेमचंद की प्रौढ़ रचना है जो हर तरह से प्रभावशाली बन पड़ी है।

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के पुरोधा हैं। वे हिंदी के महान्तम लेखकों में से एक हैं। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है।उन्होने कहानी और उपन्यास के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया। वे एक संवेदनशील लेखक थे। प्रेमचंद का लेखन हिंदी साहित्य में एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी के विकास का अध्ययन अधूरा रहेगा।

डॉ. नागेन्द्र कहते हैं '' गतयुग के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में आर्थिक विषमताओं के जितने भी रूप संभव थे प्रेमचंद की दृष्टि उन सभी पर पड़ी और उन्होने अपने ढंग से उन सभी का समाधान प्रस्तुत किया है। परन्तु

उन्होने अर्थवैषम्य को सामाजिक जीवन का ग्रन्थि नही बनने दिया। उनके पात्र आर्थिक विषमताओं से पीड़ित हैं, परंतु वे बहिर्मुखी संघर्ष द्वारा उनपर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। मानसिक कुंठाओं का शिकार बनकर नही रह जाते।''

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों का कथानक विधवा विवाह, अनमेल विवाह, आर्थिक विषमता, पूंजीवादी शोषण, महाजनी, किसानों की समस्या तथा मद्यपान आदि को बनाया। तात्कालीन परिस्थितियों में शायद ही कोई ऐसा विषय छूटा हो जिसे प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जीवंत न किया हो।

''प्रेमचंद का व्यक्तित्व सबसे अधिक विकसित होता है जब वे निम्न मध्यवर्ग और कृषक वर्ग का चित्रण करते है।'' प्रेमचंद ने गाँधी की तरह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक–राजनीतिक धार्मिक और आर्थिक मे अन्याय, अनीति शोषण एवं दमन का विरोध किया है।

"We can know more about him than we know about any of our follow creature, because his creator and narrator are one."

प्रेमचंद की जीवन दृष्टि व्यापक एवं उदार है। एक ओर वह देश का कल्याण चाहते है, तो दूसरी ओर विश्व का मंगल, एक ओर व्यक्ति की हितकामना करते है दूसरी ओर समष्टि की मंगलकामना। किशोरीलाल गोस्वामी भी उपन्यास को सामाजिक दृष्टि से शिक्षा का साधन समझते थे।

''इसके पढ़ने से मनुष्य के हद्य के ऊपर बड़ा असर होती है और यह सब बात बनती है।'' अन्य उपन्यासों मे भी ''हिन्दु समाज के अनाचारों को दूर करने का भरसक प्रयत्न लेखक ने किया है। उपन्यासकार के लिए कथावस्तु चुनने की एकमात्र कसौटी यह है कि जीवन को समग्र और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करे। हड़सन ने कहा है:

"A novel is really great only when it lays its foundations broad and deep in the things which must constantly and seriously appeal to us in the struggle and fortunes of our common humanity."

"A novel opens a new word to the imagination in a few novel it is a word which creates an illusion so pleasant that we are content to be last in it."

प्रेमचंद एक सिद्धहस्त उपन्यासकार है। यथार्थवाद की तरह प्रेमचंद ने आदर्शवाद को भी साहित्य के प्राणवत स्वीकारा है। प्रेमचंद ने जिस यथार्थ का पौधा अंकुरित किया उसके आदर्श के दो फल आए है। उन्होने यथार्थ और आदर्श दोनो को ही साहित्य की सच्चाई स्वीकारा है। प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव जीवन का चित्र कहा है। प्रेमचंद को भाषा का जादूगर कहा जाता है। प्रेमचंद का उर्दू भाषा पर पूरा अधिकार था।

कहानी सुनने की उत्सुकता मे हम सभी थोड़े बहुत अंश मे यशोधरा काव्य के राहुल के समान धर्म है जो अपनी इस मूल जिज्ञासा वृत्ति को शमन के लिए कहता है। ''राजा या रानी माँ कहे एक कहानी''

निष्कर्ष

''उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाय उतना ही अच्छा है। वार्तालाप को केवल रस्मी नही होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को जो किसी चरित्र के मुँह से निकले उसके मनोभावो और चरित्र पर कुछ प्रकाश डालना चाहिए। बातचीत का स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकुल सरल और सूक्ष्म होना आवश्यक है।''

संदर्भ सूची

1. *प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ,* प्रेमचंद साहित्य डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रथम संस्करण 2004)।
2. रामबक्ष, *प्रेमचंद और भारतीय किसान,* शोध पुस्तक रूप में भी उपलब्ध, प्रथम संस्करण 1982, वाणी प्रकाशन।

3. प्रेमचंद के किसान हमारे समय में, *जनमत* पत्रिका का विशेषांक जनवरी 2006।
4. जमीनः ग्रामीण समाज की जमीनी हकीकत का आख्यान, श्रीधरम, *लमही* पत्रिका, जनवरी–मार्च 2014।
5. प्रेमचंद, *कर्मभूमि,* हंसप्रकाशन, इलाहाबाद।
6. प्रेमचंद, *गोदान,* सरस्वतीप्रेस, इलाहाबाद ।
7. बलवंत साहू जादव, *प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना,* अल्का प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 1991।
8. सुदेश बक्ष, हिन्दी उपन्यास : *दलित परिप्रेक्ष्य*।
9. रामविलास शर्मा, *प्रेमचंद और उनका युग,* राजकमल प्रकाशन।
10. नामवर सिंह, *प्रेमचंद और भारतीय किसान, भारतीय उपन्यास की अवधारणा और स्वरूप,* संपादक–आलोक गुप्त, राजपाल प्रकाशन।
11. मदान इन्दूनाथ, *प्रेमचंद एक विवेचन,* पृ. 4।
12. Forster E. M., *Aspects of the Novel*, page 55.
13. गोस्वामी किशोरीलाल, सुखशर्वरी भूमिका।
14. वाष्णेय लक्ष्मीसागर, *आधुनिक हिन्दी साहित्य,* पृ. 96।
15. Hudson W.H., *An introduction to the study of literature*, page 132.
16. Percy lubock the craft of fiction.
17. मैथिलीरूारणगुप्त, *यशोधरा,* पृ. 89 (संवत् 1989 संस्कृत)।

****